नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

बहुलता भारत की मजबूती का आधार है : कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा, 21 नवंबर 2016: देश के जाने-माने मनोविज्ञानी तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा है कि बहुलता भारत की मजबूती का आधार है। हम बहुलता में जीते हैं, उसे अपनाते हैं। दूसरी भाषाओं के साथ जोड़ना और जीना हमारा स्वभाव है। प्रो. मिश्र पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग का हिंदी विभाग और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित (18 एवं 19) राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर

रहे थे। ''पूर्वोत्तर भारत की भाषा, साहित्य एवं संस्कृति का बदलता स्वरूप'' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का समापन प्रो. मिश्र की अध्यक्षता में किया गया। उन्होंने कहा कि बहुलता भारतीय पहचान में घुली हुई है। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत की विविधता के साथ सांस्कृतिक संबंध जोड़ने के लिए नेहू के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. माधवेंद्र प्रसाद पाण्डेय द्वारा दिए गए पूर्वोत्तर साहित्य को हिंदी में और हिंदी के साहित्य को पूर्वोत्तर की भाषाओं में लाने के लिए अनुवाद प्रकोष्ठ की स्थापना, उनके प्रकाशन के प्रस्ताव को स्वीकारने की घोषणा की। प्रो. पाण्डेय के इस सुझाव को भी कुलपति ने स्वीकार किया कि हिंदी के पाठ्यक्रमों में पूर्वोत्तर के साहित्य को शामिल किया जाना चाहिए और उसका एक मुकम्मल पाठ्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए। समापन सत्र को हिंदी के मशहूर साहित्यकार सूर्यप्रसाद दीक्षित व

साहित्य समालोचक विभूषण ने भी संबोधित किया। डॉ. भरत प्रसाद ने संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। डॉ. हिंतेंद्र कुमार मिश्र ने संचालन किया तथा संगोष्ठी के संयोजक प्रो. दिनेश कुमार चौबे ने आभार माना। इस अवसर पर छात्राओं ने वरगीत तथा खासी, नेपाली, अरूणाचली, असमिया और पूर्वोत्तर का समन्वित नृत्य प्रस्तुत किया। समापन के पूर्व सत्रों में सूर्यप्रसाद दीक्षित की अध्यक्षता में पूर्वोत्तर के साहित्यिक पर आयोजित सत्र में डॉ. श्रुति पाण्डेय, प्रो. रविभूषण, डॉ. अखिलेश शंखधर, डॉ. रंजीत कुमार सिंह और डॉ. कृपा शंकर चौबे ने वक्तव्य रखे। प्रो. असगर वज़ाहत की अध्यक्षता में पूर्वोत्तर भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य पर आयोजित सत्र में प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, प्रो. ए. के. ठाकुर, डॉ. युकीभूटिया वतेजीइशा ने वक्तव्य रखे।

फोटो परिचय : संगोष्ठी के समापन सत्र में संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र । मंच पर प्रो. माधवेंद्र पाण्डेय, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, प्रो. रविभूषण, प्रो. दिनेशकुमार चौबे, डॉ. भरत प्रसाद त्रिपाठी, डॉ. हितेंद्र कुमार मिश्र।